IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

परशुराम शुक्ल की की परियो की बालकहानियों में यथार्थ कल्पनशीलता की समग्रता

रामा तोमर
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर म.प्र.

शोध सार
परीकथाएँ लोककथाओं के समान जनसामान्य में प्रचलित है, किन्तु इन्हें सर्वाधिक सफलता बाल कहानियों के रूप में मिली है। यही कारण है कि विश्व के अधिकांश देशों के परीकथा लेखको ने पुरानी परीकथाओं के संकलन के साथ ही नयी परीकथाएँ भी लिखी है। वर्तमान समय में भी बहुत से बाल साहित्यकार अपनी कल्पना के आधार पर नयी–नयी परीकथाओं का सृजन कर रहें है।

परियों की बाल कहानियों में मैंने भारतीय परीकथाओं से सम्बंधित मान्यता को स्वीकार करते हुए ऐसी परीकथाओं का सृजन किया है। जिसमे सुन्दर–सुन्दर पंख लगा कर परियाँ स्वर्ग से धरती पर आती है। यहाँ के निर्जन वनों के तालाबों में अपने पंख उतार कर तरह–तरह की जल क्रीडाएँ करती है। कभी–कभी वे मुसीबत से भी फँस जाती थी। ऐसी स्थिति मे धरती का ही कोई मानव उन्हें बचाता है। पुस्तक में परीकथाओं के साथ ही देव, दानवों, राक्षसो आदि की भी कहानियाँ हं। इनमें पंख लगा कर उड़ने वाली परियाँ नहीं है। अतः भारतीय मान्यता के अनुसार इन्हें परीकथाओं की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, किन्तु विदेशी मान्यता के अनुसार ये परीकथाएँ है।

मुख्य बिन्दु– सफलता, संकलन, परीकथाएँ, कल्पना, सृजन, तालाबों, जल क्रीडाएँ, मुसीबत, भारतीय मान्यता, परीकथाएँ।

शोध प्रपत्र
विश्व के अन्य देशों में, विशेष रूप से यूरोप के देशों मे बच्चे भी परी होते है। यहाँ की परीकथाओं में देव, दानव, राक्षस, जादूगर, जादूगरनी आदि की कथाओ को भी सम्मिलित किया गया है। इसके साथ ही पशु–पक्षियों की कथाओं को भी परीकथाएँ माना गया है। इस प्रकार हम कह सकते है कि विदेशी परीकथाओं में नायक और नायिका दोनों होते है। परियाँ सुन्दर भी होती है और कुरुप भी। हित करने वाली होती है और अहित करने वाली भी। कभी–कभी इनका चित्रण बहुत बुरी, भयानक और सनकी पात्र के रूप में किया जाता है, किन्त, भारतीय परियों के समान विदेशी परियाँ भी चमत्कारी शक्तियों वाली होती है।
परियों की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे मैक एडवर्ड लीच ने अपनी पुस्तक स्टेन्डर्ड डिक्शनरी ऑफ फौकलोर मे विस्तार से प्रकाश डाला है। परियों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में भी कई सिद्धान्त है। एक तो यह है कि परियाँ वे देवता अथवा महापुरूष है। जिनका महत्त्व कम हो गया और वे पुराने देवताओं के रूप मे नई राहें दिखाते हैं।

''परशुराम शुक्ल की परियों की बालकहानियों में परीकथाएँ कल्पना और यथार्थ का समन्वय है। परियों के सम्बन्ध मे बहुत सी कथाएँ है। जो परीलोक से आती है। परीलोक मे चली जाती है। इन से जुड़ी बहुत सी अलौकिक गाथाएँ एवं कथाएँ है। जो बहुत ही रोचक और कौतुहलपूर्ण है। जिसमे मानव का हित ओर अनहित रहता है। क्रिसियन धर्म की धार्मिक पुस्तक बाइबिल में बहुत सी परीकथाओं के दृष्टांत है।''[1]

परीकथाएँ रोचक होती है। इनमें व्यक्ति की समस्याओं के कारण और उनके समाधान भी है। अलौकिक शक्तियों की रहस्यमय गाथाएँ थीं तथा उनके, मानव का हित ओर अहित करने वाले चामत्कार है। अतः इनका विकास हुआ और ये एक विशाल क्षेत्र में फैल गयी। परीकथाएँ रोचक और कौतूहल से भरी होने के कारण बड़ी तेजी से लोकप्रिय हुई तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होने लगी। मानव ने इनमे समय और परिस्थितियों के अनुसार अनेक परिवर्तन भी किये तथा कुछ नयी कहानियाँ भी गढ़ीं। इस प्रकार कभी धीमी गति से और कभीतीव्र गति से इनका विकास हुआ। परियों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में लोगों के अलग–अलग मत है। जिसमे व्यक्ति का लगाव आनंद हमारे समाज मे प्रचलित है। जिनमें रोचकता के साथ–साथ नया सजृन और कोमल भावनाएँ भी दिखलाई पड़ती है। मानव जीवन अनेक प्रकार की प्राकृतिक विविधाओं से घिरा, रहता है। जिसमे बहुत सी रहस्यमयी शक्तियाँ पाई जाती है।

मानव ने अपनी समझ में आँधी, तूफान, बाढ़, सूखा आदि प्राकृतिक आपदाओं का कारण मालूम कर लिया था और इसका हल भी ढूँढ निकाला था। किन्तु मृत्यु अभी तक एक पहेली बनी हुई है। अतः मानव ने इस पर भी विचार किया। इसके परिणाम स्वरूप आत्माओ का आविर्भाव हुआ और भूत–प्रेत, चुडैल आदि मृतात्माओं की उत्पत्ति हुई। मानव ने अनुभव किया कि अतृप्त आत्माएँ भूत–प्रेत एवं चुडैल आदि के रूप में मानव का अहित करती है।

''परशुराम शुक्ल की परीकथाएँ व्यवहारिक तौर पर परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तनशील है। उनमे रोचकता के साथ–साथ जीवन के रहस्य और प्राकृतिक विपत्तियों है। मानव का हित एवं अहित है। लेखक ने जीवन के अनेक प्रकार के विकासात्मक पक्षों को दोहराया है। परीकथा से संबधित है। मानव मूल्य भी कहीं न कहीं परीकथाओ स जुड़े रहते है। चमत्कारी तारास्त्र नामक कहानी में परीलोक के बारे में बताया है।''[2]

परीलोक की परियाँ तो धरती पर प्रायः आती रहती थी, किन्तु परियो की रानी धरती पर कभी नहीं आयी। उसने अपनी बेटी को भी धरती पर कभी नहीं आने दिया। रानीपरी ने अपनी माँ से सुन रखा था कि धरती बहुत सुन्दर है। किन्तु धरती पर खतरे भी कम नहीं है। अतः उसने यह निश्चय कर लिया था कि वह धरती पर कभी नहीं जाएगी,
''परशुराम शुक्ल ने चमत्कारी तारास्त्र नामक कहानी में परीलोक की परियाँ जो धरती पर आती है। उसके सम्बंध में अपने विचार व्यक्त किये है। ऐसा बहुत से लोग मानते हैं कि परियाँ नदियाँ, झील, तालाबों में जलक्रीड़ा करती है और फूलों की मालाएँ पहनकर रात में उड़ जाती है। परियों का जीवन बडा सुन्दर व स्वच्छ होता है। घरों में रात्रिगत समय, बहुत से बुजुर्ग लोग परियो की कहानियों को अपने बालयौवनाओं को सुनाते है।''[3]

परीकथाओं से संबन्धित कई लोक कथाए भी है। जो परियों के साथ उनका समन्वय कराती है। राक्षस कई वर्षो तक भगवान की तपस्या करता रहा। हिमालय की बर्फ जमा देने वाली ठण्डक तेज वर्षा और शरीर भेदने वाली तूफानी हवाओ का उस पर काई प्रभाव नहीं पड़ा। बाघ, तेन्दुआ, भालू जैसे हिंसक पशु भी उसके निकट पहुंचे, किन्तु उसे इनका पता ही नहीं चला। राक्षस भगवान शंकर की तपस्या में इतना लीन था। उसे भगवान शंकर के अतिरिक्त कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था। वह भगवान शंकर का जप कर रहा था और अपनी बन्द आँख से उन्ही को देख रहा था।

''युवा राक्षस गोरे चमत्कारी साधू नामक कहानी में परशुरामशुक्ल ने शक्तिशाली ओर चमत्कारी शक्तियों को दर्शाया है। जिसमें पूजा, आराधना, दिनचर्या और जीवन की निरंतरता को व्यक्त किया है। जिसमे बहुत सी रहस्यात्मक घटनाएँ, त्रासदियों को शुक्ल ने इस कहानी के माध्यम से आम जन तक पहुँचाया है। किस प्रकार

से मानव बस्ती के लोग परेशान थे अविवाहित एवं विवाहित स्त्रियाँ गायब होती जा रही थी जो एक रहस्य का विषय बना था।''[4]

ब्रह्माणी का वरदान नामक कहानी में कामदेव की मनोस्थिति को दर्शाया है। ''भगवान शंकर पर कामदेव के बाणों का कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था। वह आँखे बन्द किये कठोर तप में लीन थे। लम्बे समय बाद उन्हें हल्का सा आभास हुआ कि कोई देवता उनकी तपस्या में विघ्न डाल रहा है। भगवान शंकर ने आँखे खोल कर इस देवता को देखते तो उनकी तपस्पा भंग हो जाती। अतः उन्होंने अपनी आत्मशक्ति से तीसरा नेत्र खोला। इस नेत्र से आग की विकराल लपटें निकल रही थी। देखते ही देखते कामदेव इन लपटों के बीच घिर गया और जल कर भस्म हो गया। ब्रह्मा जी के वरदान नामक कहानी में कामदेव के बाणो का वर्णन किया है। कामदेव मानसिकता के लोग अक्सर अपनी कामुक प्रवृतियों के द्वारा रतियों का शोषण करते हैं। क्योंकि कामदव हमेशा भोग लिप्सु एवं भोगच्छु भावना मे डूबा रहता है। उसके पास आत्मशक्ति नहीं होती है। हमेशा सुन्दर–सुन्दर स्त्रियों को भोगना चाहता है।''[5]

वर्तमान समय में हमारे समाज में ऐसे बहुत से कामदेव है। जो अपनी कामीनिगाहों के द्वारा बहुत सी महिलाओ का शिकार करते है। उनकी कामतृप्ती की पूर्ति नहीं होती। कामदेव मानसिकता के लोग हमेशा समाज के लिए काफी दुखदायी होते है क्योंकि इनके द्वारा समाज मे दुष्चरित्रता पनपतो व विकसित होती है।

सन्दर्भ सूची

1 शुक्ल परशुराम, परियों की बाल कहानियाँ, प्रकाशन–जयपुर, संस्करण–2015, पृष्ठ–1

2 शुक्ल परशुराम, परियों की बाल कहानियाँ, प्रकाशन–जयपुर, संस्करण–2015, पृष्ठ–2

3 शुक्ल परशुराम, परियों की बाल कहानियाँ, प्रकाशन–जयपुर, संस्करण–2015, पृष्ठ–128

4 शुक्ल परशुराम, परियों की बाल कहानियाँ, प्रकाशन–जयपुर, संस्करण–2015, पृष्ठ–82

5 शुक्ल परशुराम, परियों की बाल कहानियाँ, प्रकाशन–जयपुर, संस्करण–2015, पृष्ठ–105